ज़ापातिस्ता - एक अनोखे समाज की गाँधीवादी शिक्षा

कृति गुप्ता और पल्लवी वर्मा पाटिल

''संघर्ष और निर्माण की कोशिशों के लिए ना तो नेताओं, ना ही मालिकों, ना ही मसीहा और ना ही उद्धारकर्ता आवश्यक हैं। एक आंदोलन के लिए चाहिए थोड़ी शर्म की भावना, थोड़ी गरिमा और बहुत सारा संगठन बनाने का काम।'' - सबकमाण्डेंट मार्कोस, ज़ापातिस्ता के मुख्य नेता

ज़ापातिस्ता मेक्सिको देश के चियापास राज्य में आदिवासियों का 25 से अधिक वर्षों से चल रहा एक आंदोलन है। ये आंदोलन हालाँकि, मैक्सिकन राज्य और पुलिस के साथ एक हिंसक झड़प के साथ 1 जनवरी 1994 मे शुरू हुआ था, पर अब यह एक शांतिपूर्ण आंदोलन है। ऐसा आदोलन जो औद्योगिक सभ्यता के विरुद्ध, एक नए समाज के निर्माण के लिए कार्यरत है। यह आंदोलन आदिवासी वैश्विक नज़रिये पर आधारित है तथा जीवन के सभी पहलुओं- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी- के क्षेत्र में एक विकल्प निर्माण करने के प्रयास में जुटा है। विशेष रूप से, यह पितृसत्ता के शोषण के सभी रूपों के ख़िलाफ़ एक वैकल्पिक दुनिया बनाने का भी प्रयास कर रहा है।

यह आज दुनिया में इस प्रकार का सबसे बड़ा आंदोलन है जिसमें 1000 गाँव और लगभग 3.5 लाख लोग जुड़े हैं, जिनमें 7 भिन्न-भिन्न भाषाओं की आदिवासी जनजातियाँ भी शामिल हैं। ज़ापातिस्ता आंदोलन से जुड़े आदिवासी अपनी पहचान एक लाल रुमाल और काले 'स्की-मास्क' से बनाते हैं। वे अपना मुँह अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए ढकते हैं - "We are invisible so you can see us!"

ज़ापातिस्ता समाज ने आदिवासी सभ्यता के मूल सिद्धांतों को सामने रखने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है- जसमें प्रकृति का संरक्षण और समाज का संघटन प्रथम स्थान पर है। इसके साथ ही उन्होंने महिलाओं के नेतृत्व को प्रोत्साहन दिया है। उनके वैकल्पिक समाज में, सभी की बातों को ध्यान से सुनना, ठीक से समझना, किसी भी व्यक्ति को ऊँच-नीच का दर्जा न देना, और सभी को उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाते हुए समाज के सभी काम सीखना, महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ज़ापातिस्ता के 1000 गाँवों का संचालन थ्री टीयर (तीन स्तरीय) सरकार के द्वारा होता है : गाँव के स्तर पर ग्राम सभा, गाँव के ऊपर एक नगर पालिका जिसे मारेज़ (Marez) कहते हैं (प्रत्येक मारेज़ में लगभग 35

गाँव शामिल हैं); और फिर जिला के स्तर पर कारकोलेस (Caracoles) (प्रत्येक कारकोलेस में लगभग 5 मारेज़ शामिल हैं)। अपनी इस सरकार को वे अच्छी सरकार (Good Government) कहते हैं, जो कि मेक्सिको सरकार के बिलकुल विपरीत है।

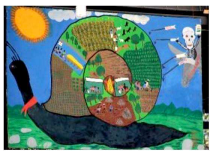

अच्छी सरकार का मतलब है कि यहाँ कोई भी किसी को निर्देश नहीं देता, हर निर्णय आपसी सहमति और लोकतांत्रिक तरीक़े से लिया जाता है। ज़ापातिस्ता के जीवन दर्शन में विकास का मतलब है धीर-धीरे आगे बढ़ना और इसलिए उन्होंने अपने आंदोलन का प्रतीक चिह्न एक ''घोंघा'' चुना है।

अगर इन सब बातों को ध्यान से समझा जाये तो यह सब बहुत तरह से गाँधीजी के 'स्वराज' की कल्पना से मेल खाते हैं और जिस तरह से गाँधीजी की नई तालीम की संरचना स्वराज को ध्यान में रख कर की गई थी, उसी तरह से ज़ापातिस्ता की शिक्षा प्रणाली की संरचना भी उनके नए प्रकार के समाज को बढ़ाने में मदद करती है।

इस लेख में हमने आपको ज़ापातिस्ता की शिक्षा प्रणाली की एक छोटी-सी झलक देने का प्रयास किया है।

ज़ापातिस्ता समाज ने जब एक वैकल्पिक दुनिया बनाने का निर्णय किया तब से वे चाहते थे कि उनके बच्चे सामूहिकता की सराहना करें, अपने आदिवासी संघर्ष की वास्तविकता और इतिहास के बारे में जानें और ये भी समझें कि उन्हें एक-दूसरे के साथ सेवाभाव से रहना है। इस शिक्षा प्रणाली की सबसे ख़ास बात यही है कि यह उनकी संस्कृति के मूल्यों का समावेश है।

इन्हीं सब बातों को आधार बनाते हुए और साथ मिलकर सीखने-सिखाने के लिए उन्होंने अपनी शिक्षा प्रणाली की रचना की और 2001 में (आंदोलन के 7 सालों के बाद ही) उन्होंने पहला ज़ापातिस्ता स्कूल स्थापित किया। यह एक स्वचालित शिक्षा प्रणाली है जहाँ अपने ही शिक्षक, अपना ही पाठ्यक्रम, अपनी ही भाषा और अपनी ही पुस्तकें हैं।

हर एक मारेज़ में समुदाय की मदद से स्कूल बनाया जाता है। प्रत्येक स्कूल की शिक्षा प्रणाली अपने मारेज़ के गाँवों की आवश्यकता के अनुसार बनायी जाती है। इस शिक्षा प्रणाली पर पूर्णतः ज़ापातिस्ता समाज का ही अधिकार है और मेक्सिको देश की शिक्षा से उसका कोई संबंध नहीं है।

अलग-अलग शिक्षा प्रणालियों के होते हुए भी कुछ विशेषताएं ऐसी भी हैं जो सभी ज़ापातिस्ता स्कूलों में समान है, जैसे कि:

- स्कूल सभी के लिए मुफ़्त हैं, यहाँ कभी कोई फीस नहीं ली जाती।
- यहाँ बच्चे और बड़े सब साथ पढ़ते हैं, उम्र की कोई सीमा नहीं है।
- स्कूलों में प्राथमिक भाषा के रूप में मातृभाषा का उपयोग किया जाता है।
- छात्रों को वर्दी का पालन करने के बजाय अपने पारम्परिक कपड़े पहनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- लिंग के आधार पर स्कूलों में कोई भेदभाव नहीं होता।
- परम्परागत शिक्षकों (Conventional Teachers) के बजाय, ''शैक्षिक प्रचारक'' (Education promoters) बच्चों को पढ़ाते हैं। उन्हें शैक्षिक प्रचारक इसलिए कहते हैं क्योंकि वे सभी एक साथ काम करते हैं और एक-दूसरे को सिखाते हैं।

- प्रचारक छात्रों के समान भाषा बोलते हैं और समुदायों द्वारा चुने जाते हैं। उन्हें इस काम के लिए कोई तनख्वाह नहीं मिलती है क्योंकि ज़ापातिस्ता समुदाय में ''शिक्षा उन लोगों के एक कर्तव्य के रूप में देखी जाती है जो उसे 'जानते हैं' और 'अधिकार' उन लोगों के लिए जो नहीं''।
- वेतन के बजाय, प्रचारकों को स्थानीय समुदायों द्वारा आश्रय, भोजन और कपड़े जैसी आवश्यकताओं के लिए सहायता मिलती है।
- अनुभवी प्रचारक नए प्रचारक को तैयार करने में समुदाय की सहयता करते हैं और इसी तरह यह पद्धति आगे बढ़ती है।
- ज़ापातिस्ता के प्रचारक का मानना है कि सीखना एक साझा अनुभव है-

  ''यहाँ हम एक-दूसरे से सीखते हैं। ऐसा नहीं की प्रोत्साहक सब जानता है। छोटे से छोटा बच्चा भी कुछ सिखा सकता है।''
- ये स्कूल ''पहले अभ्यास, फिर सिद्धांत के दृष्टिकोण'' का पालन करते हैं। सामूहिक रूप से, अच्छी सरकार, समुदायों और प्रवर्तकों की परिषदें तय करती हैं कि छात्रों को क्या सीखना चाहिए, कैसे सिखाया जाना चाहिए, और उनके सीखने का मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए।
- स्कूल से यह उम्मीद की जाती है कि सभी छात्र अपनी पहली भाषा के साथ-साथ स्पेनिश भाषा में पढ़ना और लिखना भी सीखें। उन्हें भाषा, गणित, इतिहास, संस्कृति, खेल, जीवन और पर्यावरण में भी कुछ अनुभव प्राप्त करने चाहिए ताकि बच्चे इन स्वायत्त स्कूलों में रहकर बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग न हो जाएं।
- अध्यापन-शास्त्र को बनाते वक्त इस बात का ख़ास ख़्याल रखा जाता है कि उसको लागू इस तरह से किया जाए जिसमें कक्षा के अंदर और बाहर की चीज़ें शामिल हों।

ज़ापातिस्ता की शिक्षा प्रणाली में यह समझ बनी है कि कुछ बातें स्कूल में नहीं आनी चाहिये जैसे किः

- किसी भी प्रकार का व्यक्तिवाद, प्रतियोगिता, या व्यवसायिक उद्यम को नहीं सिखाना है।
- सीखने की प्रक्रिया में शर्म का कोई स्थान नहीं है।
- बच्चों को मारना, किसी तरह की सज़ा, और किसी भी तरह का अनादर-तिरस्कार करना सख़्त मना है।

फिर किन मूल्यों को सिखाएं ?

- अपने काम और समझ से भूमंडल की रक्षा करें।
- समुदाय में ज़िम्मेदारी के साथ सबके भले के लिए काम करें।
- बच्चे मुक्ति और स्वाभिमान के बारे में सीखें।
- और हरेक मनुष्य को आदर देना सीखें।

यूनिटिएरा विश्वविद्यालय - पृथ्वी का विश्वविद्यालय

जब ज़ापातिस्ता समुदाय ने स्कूलों के लिए अवधारणा बनाई थी, तब से लेकर एक लम्बे अरसे तक एक सवाल जीवित रहा और वो यह था कि जब बच्चे स्कूल में जो पढ़ाया जाता है वो सब पढ़ लेंगे, तब वो आगे की शिक्षा के लिए कहाँ पढ़ने जाएंगे?

1999 में स्वदेशी जनजातियों की इस आवश्यकता को महसूस करते हुए, गुस्तावो एस्टेवा और जेमी मार्टिनेज लूना ने ओक्साका नामक मेक्सिको के सबसे विविध और ग़रीब राज्य में यूनिटिएरा विश्वविद्यालय (पृथ्वी विश्वविद्यालय) की स्थापना की।

इस विश्वविद्यालय के संस्थापक आधुनिक शिक्षा प्रणाली और आधुनिक जीवन की अवधारणा की आलोचना करते हैं जो कि पश्चिमी ढाँचे पर आधारित हैं, जिसमें केवल मुद्रा, और आर्थिक लाभ पर ध्यान दिया जाता है। उनका मानना है कि यूनिटिएरा की दृष्टि प्राकृतिक वातावरण और प्राकृतिक सोच से आती है, जिसे किसी ऐसी वस्तु के रूप में नहीं देखा जा सकता जो कि किसी के द्वारा ख़रीदी या बेची जा सके। यह हमारी माँ है और हम उसके बच्चे हैं, यूनिटिएरा का एक समग्र दृष्टिकोण है। गुस्तावो एस्टेवा कहते हैं कि यहाँ गतिविधियाँ समुदाय की जरूरतों और रचनात्मकता के निरंतर प्रवाह पर अत्यधिक निर्भर हैं: ''हम उस चीज को साझा करना पसंद करते हैं जो लोग जानना चाहते हैं''।

यूनिटिएरा का सिलाई घर, पशु पालन घर और मक्का पीसने की मशीन

वर्तमान में, चियापास में स्थित यूनिटियरा विश्वविद्यालय 20 हेक्टेयर में फैला हुआ है और लगातार कम से कम 150 छात्र वहाँ अध्ययन करते हैं। यह एक स्वशासित युनिवर्सिटी है।

छात्र वो सभी कुछ सीख सकते हैं जो वो सीखना चाहते हैं, बिना किसी तय अनुक्रम के इस विश्वविद्यालय में सिलाई, बुनाई से लेकर प्रिंटिंग, यांत्रिकी, आर्किटेक्चर, गाना, बजाना और जूता बनाना तक के लिए अलग-अलग कक्षा घर है। एक पुस्तकालय और सेमिनार हॉल भी है। यह बिल्डिंग मिट्टी, और अन्य प्राकृतिक सामग्री से बनाई गई है; और पेड़-पौधे और पारम्परिक कला से सजाई गई है।

यूनिटिएरा विश्वविद्यालय सभी वर्ग के छात्रों को सीखने का अवसर प्रदान करना चाहते थे, लेकिन कुछ समय बाद, उन्होंने महसूस किया कि सभी स्वदेशी छात्र अपने शहर से ओक्साका में नहीं आ सकते क्योंकि उनके पास यहाँ पर्याप्त संसाधन और सुरक्षा नहीं है। इसलिए उन्होंने हर हफ़्ते अलग-अलग जगहों पर जाने का फैसला किया (चियापास भी उनमें से एक है) और वर्कशॉप दिए ताकि बच्चों को पढ़ने या सीखने में किसी भी तरीक़े की कठिनाइयों का सामना ना करना पड़े।

ज़ापातिस्ता समाज की शिक्षा आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की शिक्षा है। ठीक नई तालीम की तरह। अगर आज की दुनिया में नई तालीम की नई चेष्टाएं देखने में रुचि हो तो हम ज़ापातिस्ता समाज की शिक्षा प्रणाली को ज़रूर जाने।

जिस तरह 1994 में ज़ापातिस्ता ने अपने नारे ''या बास्ता!'' मतलब, ''अब, बस!'' से नए समाज की ओर कदम बढ़ाये थे, हमें भी, आज के संदर्भ में नई तालीम की ओर कदम बढ़ाने के लिए मेनस्ट्रीम शिक्षा को ''या बास्ता'' बोलना होगा! ◆

कृति गुप्ता : शिक्षकों के परिवार में जन्मी और पली-बढ़ी, कृति गुप्ता का झुकाव बहुत कम उम्र से शिक्षा की ओर था। अपनी रुचि को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से बैचलर इन एलीमेंट्री एडुकेशन किया है और कई संगठनों में स्वेच्छा से काम किया है, जिसमें एकलव्य, महिलाओं और स्वास्थ्य का एक संसाधन समूह, लोकपंचायत आदि शामिल हैं। हाल ही में, उन्होंने अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से डेवलपमेंट में मास्टर डिग्री पूरी की है। वह शिक्षा और मनोविज्ञान के क्षेत्र में रुचि रखती है।

संपर्क : kritiguptaa96@gmail.com

पल्लवी वर्मा पाटिल : 2013 से अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के विकास स्कूल संकाय में कार्यरत हैं। वे 'आज और कल के लिए नई तालीम', 'लिविंग यूटोपिया', 'फूड एंड न्यूट्रिशन इन एक्शन' शीर्षक वाले पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं। वह युवा वयस्कों के लिए गाँधी रीडर की सह-लेखिका हैं। भोजन के इर्द-गिर्द पल्लवी की सक्रियता में फूड एंड आइडेंटिटी नामक एक कार्यशाला-आधारित पाठ्यक्रम शामिल है, जो शिक्षकों के एक नेटवर्क का समन्वय करता है जो भोजन के माध्यम से पढ़ाते हैं, और दि रागी प्रोजेक्ट नामक एक शहरी स्कूल में एक कृषि परियोजना का समन्वय करती हैं।

संपर्क : pallavi.vp@apu.edu.in

संदर्भ :

1. http://enlivenedlearning.com/category/universidad-de-la-tierra/
2. Gahman, Levi (2016) Dismantling neoliberal education: a lesson from the Zapatistas. Roar Magazine. Retrieved from https://roarmag.org/essays/neoliberal-education-zapatista-pedagogy/